हिंदी शब्दसागर, हिन्दी भाषा के लिए बनाया गया एक बृहत् शब्द-संग्रह तथा प्रथम मानक कोश है। इसका निमार्ण नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ने किया था। इसका प्रथम प्रकाशन १९२२-१९२९ के बीच हुआ। यह वैज्ञानिक एवं विधिवत् शब्दकोश मूल रूप में चार खण्डों में बना। इसके प्रधान सम्पादक श्यामसुन्दर दास थे तथा बालकृष्ण भट्ट, लाला भगवानदीन, अमीर सिंह एवं जगन्मोहन वर्मा सहसम्पादक थे। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं आचार्य रामचंद्र वर्मा ने भी इस महान कार्य में सर्वश्रेष्ठ योगदान किया। इसमें j एक लाख शब्द थे। बाद में सन् १९६५-१९७६ के बीच इसका परिवर्धित संस्करण ११ खण्डों में प्रकाशित हुआ।

^ संक्षिप्त इतिहास

- हिंदी में सर्वांगपूर्ण और बृहत् कोश का अभाव नागरी प्रचारिणी सभा के संचालकों को **१८९३ ई०** में ही खटका था और उन्होंने एक उत्तम कोश बनाने के विचार से आर्थिक सहायता के लिये दरभंगानरेश महाराजा सर लक्ष्मीश्वर सिंह जी से प्रार्थना की थी। महाराजा ने भी शिशु सभा के उद्देश्य की सराहना करते हुए १२५ रूपए उसकी सहायता के लिये भेजे थे और उसके साथ

Scanned with CamScanner

उसकी सहायता के लिये भेजे थे और उसके साथ सहानुभूति प्रकट की थी।

- **२३ अगस्त सन् १९०७** को सभा के परम हितैषी और उत्साही सदस्य श्रीयुक्त रेवरेंड ई० ग्रीव्स ने सभा की प्रबंधकारिणी समिति में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि हिंदी के एक बृहत् और सर्वांगपूर्ण कोश बनाने का भार सभा अपने ऊपर ले और साथ ही यह भी बतलाया कि यह कार्य किस प्रणाली से किया जाए। सभा ने मि० ग्रीव्स के प्रस्ताव पर विचार करके इस विषय में उचित परामर्श देने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति नियत कर दी-रेवरेंड ई० ग्रीव्स, महामहोपाध्याय पंडित सुधाकर द्विवेदी, पंडित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू गोविंददास, बाबू इंद्रनारायण सिंह एम० ए०, छोटेलाला, मुंशी संकटाप्रसाद, पंडित माधवप्रसाद पाठक और श्यामसुन्दर दास।
- **९ नवम्बर १९०७** को इस उपसमिति ने अपनी रिपोर्ट दी, जिसमें सभा को परामर्श दिया गया कि सभा हिंदीभाषा के दो बड़े कोश बनवाए जिनमें से एक में तो हिंदी शब्दों के अर्थ हिंदी में ही रहें और दूसरे में हिंदी शब्दों के अर्थ अँग्रेजी में हों।
- सभा ने इस कार्य के लिये अनेक राजा-महाराजों से आर्थिक सहायता प्राप्त की।
- सभा ने निश्चित किया कि शब्दसंग्रह का काम वेतन देकर कुछ लोगो से कराया जाए। तदनुसार प्रायः १६-१७ आदमी शब्दसंग्रह के काम के लिये नियुक्त कर दिए गए और एक निश्चित प्रणाली पर शब्दसंग्रह का काम होने

Scanned with CamScanner

नागरीप्रचारिणी सभा

इस लेख में सन्दर्भ या स्रोत नहीं दिया गया है।

Learn more

नागरीप्रचारिणी सभा, हिन्दी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि की उन्नति तथा प्रचार और प्रसार करनेवाली भारत की अग्रणी संस्था है। भारतेन्दु युग के अनन्तर हिन्दी साहित्य की जो उल्लेखनीय प्रवृत्तियाँ रही हैं उन सबके नियमन, नियंत्रण और संचालन में इस सभा का महत्वपूर्ण योग रहा है।

Scanned with CamScanner

निश्चित किया।

- **सन् १९१०** के आरंभ में शब्दसंग्रह का कार्य समाप्त हो गया। जिन स्लिपों पर शब्द लिखे गए थे, उनकी संख्या अनुमानतः १० लाख थी, जिनमें से आशा की गई थी कि प्रायः १ लाख (बिना दुहराए) शब्द निकलेंगे और प्रायः यही बात अंत में हुई भी।
- **मई, १९१२** में छपाई का कार्य आरंभ हुआ और एक ही वर्ष के अंदर ९६-९६ पृष्ठों की चार संख्याएँ छपकर प्रकाशित हो गई, जिनमें ८६६६ शब्द थे। सर्वसाधारण में इन प्रकाशित संख्याओं का बहुत आदर हुआ।
- इस प्रकार १९१७ तक बराबर काम चलता रहा और कोश की १५ संख्याएँ छपकर प्रकाशित हो गई तथा ग्राहक संख्या में बहुत कुछ वृद्धि हो गई।
- **सन् १९२४** में कोश के संबंध मे एक दुर्घटना हो गई थी। आरंभ में शब्दसंग्रह की जो स्लिपें तैयार हुई थी, उनके २२ बंडल कोश कार्यालय से चोरी हो गए। उनमें 'विव्वोक' से 'शं' तक की और 'शय' से 'सही' तक की स्लिपें थी।
- **जनवरी, १९२९** को यह कार्य समाप्त हुआ।
- इस प्रकार यह बृहत् आयोजन २० वर्ष के निरंतर उद्योग, परिश्रम और अध्यवसाय के अनंतर समाप्त हुआ। इससें सब मिलाकर ९३,११५ शब्दों के अर्थ तथा विवरण दिए गए थे और आरंभ में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास का इतिहास भी दे दिया गया था जिसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तैयार किया था। इस समस्त कार्य में सभा का तबतक १०,२७३५ रूपये हुए, जिसमें छपाई आदि का भी व्यय सम्मिलित है।

Scanned with CamScanner

शब्द का मूल स्रोत देखने के प्रयास के साथ-साथ विभिन्न [illegible] कोश का निर्देश करने की चेष्टा हुई। यद्यपि बहुत सी त्रुटियाँ ऐसी हैं जो [illegible] और [illegible] हैं। अथवा कहीं कहीं अशुद्ध भी हैं तथापि उसके लिये [illegible] और [illegible] जो प्रयास है वह भी अपने आपमें बड़ा महत्व रखता है।

व्याकरणमूलक व्यवस्था के अनुसार शब्द एवं अर्थ के [illegible] का हिंदी शब्दसागर में अत्यंत प्रौढ़ विनियोजन दिखाई देता है। पर्याय-निर्देश पर जहाँ एक ओर संस्कृत कोशों का व्यापक प्रभाव है और प्रायः [illegible] यौगिक पदों का उल्लेख भी संस्कृत व्याकरण पर अधिकतः आधारित है वहीं दूसरी ओर हिंदी की प्रकृति और प्रयोग-परंपरा का आकलन और [illegible] भी बड़े ध्यान और मनोयोग के साथ किया गया है। हिंदी के मुहावरों और लोकोक्तियों या प्रयोगों अथवा क्रियाप्रयोगों की प्रयोगपरंपरा से आगत अर्थों की व्याख्या भी इसमें पर्याप्त प्रौढ़ है।

शब्दसागर में अर्थनिर्धारण में व्याख्यात्मक पद्धति अपनाई गई है। [illegible] ही मुख्य शब्दों के अंतर्गत अधिकांशतः पर्याय भी साथ दिए गए हैं। इस कारण कभी कभी ऐसा भी लगता है कि यह कोश आधुनिक ढंग का पर्यायवाची और अनेकार्थक कोश एक साथ बन गया है। व्याख्यात्मक पद्धति के अंतर्गत व्यक्ति, विषय, वस्तु आदि का पौराणिक, ऐतिहासिक, शास्त्रीय और परंपरागत अनेक प्रकार के परिचय एवं विवरण यथास्थान दिए गए हैं। इस कारण यह कोश विश्वकोश, ज्ञानकोश, चरितकोश और पारिभाषिक कोश के परिवेश का भी यत्र-तत्र स्पर्श करता दिखाई देता है।

इसमें कुछ कमियाँ भी गिनाई जा सकती हैं। शब्दों के समस्त अर्थों की प्रस्तुति प्रयोगपुष्टि और कालानुक्रम के आधार पर नहीं की गई है। जहाँ है वहाँ भी बहुधा ग्रंथों के नाममात्र ही निर्दिष्ट कर दिए गए हैं। उनके प्रयोग-स्थल और संस्करण आदि का उल्लेख नहीं किया गया है। उनके स्थानों पर बोलचाल के स्वनिर्मित उदाहरण भी नियोजित किए गए हैं। कुल मिलाकर इसमें शब्दकोश और अर्थविकृति दोनों की परिधि को यथासंभव व्यापक और विस्तृत बनाया गया है। इस क्षेत्र में विभिन्न पेशों और वर्गों के जनजीवन से संगृहीत शब्दभण्डार की संयोजना से इस कोश का महत्व बहुत बढ़ गया है।

विश्वकोश (इन्साइक्लोपीडिया)

आजकल कोश की एक अन्य विधा या प्रकार के रूप में 'विश्व कोश'

'ज्ञानदीपिका', 'विश्वदर्शन', 'ज्ञानकोश', 'विश्वविद्यालय-भंडार' आदि संज्ञाओं अथवा नामों का प्रयोग भी किया जाता है। इसे अंग्रेजी में 'इन्साइक्लोपीडिया' कहा जाता है। अंग्रेजी भाषा के 'इन्साइक्लोपीडिया' को ग्रीक मूलतः Enkuklios paideia से जोड़ कर देखा जाता है, जो 'enkuklios' शब्द पर आधारित है और जिसका अर्थ है- चक्राकार (cyclical), आवर्ती या नियतकालिक (periodic), सामान्य (ordinary)। वहीं ग्रीक शब्द paideia का अर्थ है- शिक्षा (Education)। अर्थात् इस व्युत्पत्ति के अनुसार उपर्युक्त पदबंध का शाब्दिक अर्थ 'सामान्य शिक्षा' समझा जाता था। बाद में ग्रीक भाषा के किसी अनुकरण-कर्ता ने इसके लिए एक साथ मिलाकर समानार्थी शब्द 'enkuklopaedia' प्रयुक्त किया। ग्रीक भाषा का यह शब्द लैटिन भाषा में एक नए शब्द 'encyclopaedia' (सबसे पहले सन् 1531 ई. में प्रयुक्त) के रूप में स्वीकार हो गया और आधुनिक भाषा अंग्रेजी में इसी वर्तनी के साथ व्यवहरित होने लगा। यह और बात है कि अंग्रेजी भाषा में इसे 'सामान्य प्रचलित निर्देश या सूचना' (general course of instruction) के अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। किसी संदर्भ ग्रंथ के शीर्षक के लिए सबसे पहले 'इन्साइक्लोपीडिया' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी भाषा में सन् 1644 ई. में किया गया था। इस प्रकार के आरंभिक कोश के निर्माण को प्राचीन काल के प्रमुख विद्वान अरस्तू के साथ जोड़ कर देखा जाता है। परवर्ती काल के कोशकारों को अरस्तू के अध्ययन का बहुत लाभ मिला और उसी से प्रभावित होकर पहली सदी के एक रोमन नागरिक ने 'Naturalis Historia of Pliny the Elder' (80 ई.पू.) का संकलन किया, जिसे बहुत दिनों तक प्रथम इन्साइक्लोपीडिया माना जाता रहा। इस ग्रंथ के 37 अध्यायों में प्राकृतिक इतिहास, कला, दवाइयाँ, भूगोल, आर्किटेक्चर, भूगर्भशास्त्र आदि सहित उस समय संसार में उपलब्ध सभी महत्वपूर्ण वस्तुओं से संबंधित 20,000 तथ्यों को 200 महत्वपूर्ण लेखकों के 2000 आलेखों से चुनकर संकलित किया गया है। इस ग्रंथ के बाद अनेक इन्साइक्लोपीडिया बने, जिसमें मार्कस टेरेंटियस वारो, गुस्टेवस वैनियर, संत आसिदोरो, बार्थोलोमस एंगुलिकस, सैंडास आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। पश्चिम में वास्तविक इन्साइक्लोपीडिया की शुरुआत 18वीं शताब्दी से माना जाता है, क्योंकि इसी काल में बहुचर्चित 'चैंबर्स इन्साइक्लोपीडिया' (1728 ई.), 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ डिडेरोट' (1751 ई.) और बाद में 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' एवं 'इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना' का प्रकाशन हुआ।

Scanned with CamScanner

अरबी एवं फारसी के अन्तर्गत इस प्रकार के कोशों का निर्माण [illegible] से शुरू हुआ। इनमें अबू [illegible] का [illegible] इन्साइक्लोपीडिया, [illegible] का 270 ग्रंथों का [illegible] संकलन और इब्न सिना का चिकित्सा से संबंधित इनसाइक्लोपीडिया महत्वपूर्ण है। इस कड़ी में [illegible] का '[illegible]', [illegible] का '[illegible]' एवं [illegible] और इब्न खालदून द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित 'मुकद्दिमा' (Muqaddimah) बहुचर्चित कोश है। उधर चीन में इस तरह का पहला संकलन 11वीं शताब्दी में प्रकाश में आया और 'संग साम्राज्य' काल में संकलित 'दि [illegible] ऑफ [illegible]' का इसी रूप में प्रस्तुत किया गया। चीन के इतिहास में कई ऐसे संग्रहों की चर्चा है। जैसे— 'Prime Tortoise of the record Bureau' इस संग्रह के 1000 अध्यायों में करीब 94 हजार चीनी प्रविष्टियों को संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त शेन कुओ (1031–95) के 'Dream Pool Essays', [illegible] 'Diderot of China', और 'Yongle Encyclopedia' (Ming Dynasty) आदि चीनी भाषा से संबंधित आकार में बड़े एवं ऐतिहासिक इनसाइक्लोपीडिया हैं।

भारतीय संदर्भ में बात की जाए तो आरंभ में बंगला भाषा के कोशकारों ने इसके लिए ज्ञानकोश नामकरण किया था और 'बंगला- ज्ञानकोश' का प्रकाशन भी हुआ था। बाद में उस कोश का हिन्दी संस्करण 'हिन्दी विश्वकोश' के नाम से छपा। इसी प्रकार उड़िया में इस शब्द का अनुवाद '[illegible]' के रूप में प्रस्तुत किया गया था। हिन्दी के प्रथम अपूर्ण विश्वकोश के संपादकों— श्री [illegible] चतुर्वेदी तथा कृष्ण वल्लभ द्विवेदी ने इसे 'विश्वभारती' अभिधान से अभिहित किया था। सरकार की ओर से बच्चों की शिक्षा को आधार बनाकर शुरू में जिस ज्ञानात्मक साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा था, उसका नामकरण '[illegible]' किया गया था।

इन विभिन्न नामों से आप ज्यादा परेशान न हों। चूँकि आने वाले जीवन में हो सकता है कि कभी-न-कभी इन शब्दों से आपका पाला जरूर पड़ेगा। अतः आपके मन में कोई संदेह न रह जाए, इसीलिए यहाँ पर यथासंभव इस कोश के नामकरण से जुड़े सभी शब्दों को रखा गया है। इन शब्दों में से सबसे ज्यादा प्रचलित शब्द 'विश्वकोश' और 'ज्ञानकोश' हैं। यद्यपि आरंभ में कोश के संदर्भ में इन शब्दों के बीच कोई स्पष्ट अन्तर रेखांकित नहीं किया गया था,

लेकिन आजकल वृहत परिवेश के व्यापक ज्ञान-क्षेत्र की समस्त [illegible] शब्दों एवं परिभाषाओं आदि के सम्बन्ध में सूचनाएँ प्रस्तुत करने वाले बड़े आकार में प्रकाशित ग्रंथ को 'विश्वकोश' अथवा 'इनसाइक्लोपीडिया' कहा जाता है और इसकी तुलना में अपेक्षाकृत लघु आकार में संकलित एवं विशेष [illegible] 'ज्ञानकोश' कहा जाता है। इन [illegible] की व्यापक सूचनाएँ देने वाले कोशों को [illegible] सूचनाओं को बेहतर ढंग से स्पष्ट करने के लिए यथासंभव चित्र भी प्रस्तुत किए जाते हैं। हिन्दी में सचित्र विश्वकोश का प्रकाशन भी हुआ है। ऐसा ही एक कोश है—सचित्र हिन्दी विश्वकोश। हिन्दी के इस 'सचित्र विश्वकोश' में अंग्रेजी के [illegible] के अतिरिक्त उनमें संकलित विषयों को ज्यादा स्पष्ट करने के लिए [illegible] चित्रों का सहारा लिया गया है।

अंग्रेजी भाषा में 'बुक ऑफ नॉलेज', '[illegible] ऑफ जनरल नॉलेज' आदि नामों से अनेक प्रकार के छोटे-बड़े विश्वकोश छपे हैं। यहाँ तक कि अब 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स', 'इनसाइक्लोपीडिया ऑफ हिन्दू' आदि प्रकार के विश्वकोशों का बहुत ज्यादा प्रकाशन हो रहा है, जिनमें किसी विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों की विस्तृत व्याख्या-परिभाषा आदि सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं संकलित की जाती हैं। अंग्रेजी भाषा में इस प्रकार के अनेक सामान्य और विशेष विश्वकोश आजकल उपलब्ध हैं। हिन्दी में भी अंग्रेजी के तर्ज पर अनेक रूपों एवं आकारों में विश्वकोशों का प्रकाशन हुआ है। इन्हें 'इतिहासकोश', 'भक्ति कोश', 'कथाकोश', 'पुराणकोश' आदि शीर्षकों के अन्तर्गत संकलित किया गया है। जनसंचार माध्यमों के तीव्र विकास ने जहाँ कोशों के प्रचलित स्वरूप में बुनियादी परिवर्तन ला दिया है, वहीं इन क्षेत्रों में प्रयुक्त नई शब्दावली को केन्द्रित करके कई विश्वकोश भी प्रकाशित किए गए हैं। जैसे—अशोक गुप्त द्वारा निर्मित 'हिन्दी पत्रकारिता संदर्भ कोश', डॉ. रामप्रकाश और डॉ. सुधीन्द्र कुमार के संयुक्त संपादन में संकलित 'पत्रकारिता संदर्भ कोश', विष्णु पंकज द्वारा संपादित 'साक्षात्कार कोश', प्रताप नारायण टंडन का 'वृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश' आदि। प्रो. रमेश जैन द्वारा संपादित एवं नेशनल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशित 'जनसंचार विश्वकोश' ऐसा ही कोश है, जिसे हिन्दी का पहला जनसंचार कोश माना जाता है। इसमें जनसंचार क्षेत्र से जुड़े विभिन्न विधाओं के पारिभाषिक शब्दों का शोधपूर्ण एवं तथ्यात्मक विवेचन किया गया है। इस कोश में शब्दों को निम्नलिखित प्रकार से संकलित किया गया है—

***Jump*— समाचार के एक अंश को समाचारपत्र के एक पृष्ठ से दूसरे पृष्ठ पर ले जाने की क्रिया को 'जंप' कहते हैं।**

Scanned with CamScanner

अरबी एवं फारसी के अन्तर्गत इस प्रकार के कोशों का निर्माण मध्यकाल से शुरू हुआ। इनमें अबू अब्द- अल-राज़ी का विज्ञान पर आधारित इन्साइक्लोपीडिया, मुहम्मद-इब्-अल- किन्दी का 270 ग्रंथों का संक्षिप्त संकलन और इब्न सिना का चिकित्सा से संबंधित इन्साइक्लोपीडिया महत्त्वपूर्ण हैं। इस कड़ी में अलराज़ी का 'पूर्वकालीन हिस्ट्री', अल मसूदी शाफी का 'हिस्ट्री ऑफ दि प्रोफेट्स एण्ड किंग्स' एवं इब्न ख़लदून, अब्द- अर्रहमान, और इब्न ख़ल्दून द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित 'मुकद्दिमा' (Muqaddimah) महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। उधर चीन में इस तरह का पहला संकलन 11वीं शताब्दी में प्रकाश में आया और 'लि फ़ाङ' काल में संकलित 'दि ग्रेट बुक्स ऑफ संग' को इसी रूप में प्रस्तुत किया गया। चीन के इतिहास में कई ऐसे ग्रंथों की गाथा है। जैसे— 'Prime Tortoise of the record Bureau' इस ग्रंथ के 1000 अंकों में करीब 94 हजार चीनी प्रविष्टियों को संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त शेन कुओ (1031-95) के 'Dream Pool Essays', चीनी इतिहासवेत्ता चेंग-चिआओ के 'Diderot of China', और 'Yongle Encyclopaedia (Ming Dynasty)' आदि चीनी भाषा के संबंधित आकार में बड़े एवं ऐतिहासिक इन्साइक्लोपीडिया हैं।

भारतीय संदर्भ में बात की जाए तो आरंभ में बंगला भाषा के कोशकारों ने इसके लिए ज्ञानकोश नामकरण किया था और 'बंगला- ज्ञानकोश' का प्रकाशन भी हुआ था। बाद में इस कोश का हिन्दी संस्करण 'हिन्दी विश्वकोश' के नाम से छपा। इसी प्रकार उड़िया में इस शब्द का अनुवाद 'ज्ञानमंडल' के रूप में प्रस्तुत किया गया था। हिन्दी के प्रथम अपूर्ण विश्वकोश के संपादकों— श्री श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा कृष्ण वल्लभ द्विवेदी ने इसे 'विश्वभारती' अभिधान से अभिहित किया था। सरकार की ओर से बच्चों की शिक्षा को आधार बनाकर शुरू में जिस ज्ञानात्मक साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा था, उसका नामकरण 'ज्ञानसरोवर' किया गया था।

इन विभिन्न नामों से आप ज्यादा परेशान न हों। चूँकि आने वाले जीवन में हो सकता है कि कभी-न-कभी इन शब्दों से आपका वास्ता ज़रूर पड़ेगा। अतः आपके मन में कोई संदेह न रह जाए, इसीलिए यहाँ पर यथासंभव इस कोश के नामकरण से जुड़े सभी शब्दों को रखा गया है। इन शब्दों में से सबसे ज्यादा प्रचलित शब्द 'विश्वकोश' और 'ज्ञानकोश' हैं। यद्यपि आरंभ में कोश के संदर्भ में इन शब्दों के बीच कोई स्पष्ट अन्तर रेखांकित नहीं किया गया था,

लेकिन आजकल बृहत परिवेश के महत्त्व ज्ञान-क्षेत्र को समेटे विशिष्ट शब्दों एवं परिभाषाओं आदि के माध्यम से सूचनाएँ प्रस्तुत करने वाले बड़े आकार में प्रकाशित ग्रंथ को 'विश्वकोश' अथवा 'इन्साइक्लोपीडिया' कहा जाता है और इसकी तुलना में अपेक्षाकृत लघु आकार में संकलित एवं विशेष जानकारी वाले ग्रंथ को 'ज्ञानकोश' कहा जाता है। इन कोशों की व्यापक सूचनाएँ देने वाले कोशों को 'ज्ञानकोश' कहा जाता है। इन सूचनाओं को बेहतर ढंग से स्पष्ट करने के लिए यथासंभव चित्र भी प्रस्तुत किए जाते हैं। हिन्दी में सचित्र विश्वकोश का प्रकाशन भी हुआ है। ऐसा ही एक कोश है— सचित्र हिन्दी विश्वकोश। हिन्दी के इस 'सचित्र विश्वकोश' में अंग्रेजी के तर्ज पर संकलित विषयों को ज्यादा स्पष्ट करने के लिए कार्टूनों के अतिरिक्त चित्रों का सहारा लिया गया है।

अंग्रेजी भाषा में 'बुक ऑफ नॉलेज', 'डिक्शनरी ऑफ जनरल नॉलेज' आदि नामों से अनेक प्रकार के छोटे-बड़े विश्वकोश छपे हैं। यहाँ तक कि अब 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एण्ड एथिक्स', 'इन्साइक्लोपीडिया ऑफ हिस्ट्री' आदि प्रकार के विश्वकोशों का बहुत ज्यादा प्रकाशन हो रहा है, जिनमें किसी विशिष्ट क्षेत्र के शब्दों की विस्तृत व्याख्या-परिभाषा आदि सभी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ संकलित की जाती हैं। अंग्रेजी भाषा में इस प्रकार के अनेक सामान्य और विशेष विश्वकोश आजकल उपलब्ध हैं। हिन्दी में भी अंग्रेजी के तर्ज पर अनेक रूपों एवं आकारों में विश्वकोशों का प्रकाशन हुआ है। इन्हें 'इतिहासकोश', 'चरित कोश', 'कथाकोश', 'पुराणकोश' आदि शीर्षकों के अन्तर्गत संकलित किया गया है। जनसंचार माध्यमों के तीव्र विकास ने जहाँ कोशों के प्रचलित स्वरूप में बुनियादी परिवर्तन ला दिया है, वहीं इन क्षेत्रों में प्रयुक्त नई शब्दावली को केन्द्रित करके कई विश्वकोश भी प्रकाशित किए गए हैं। जैसे– अशोक गुप्त द्वारा निर्मित 'हिन्दी पत्रकारिता संदर्भ कोश', डॉ. रामप्रकाश और डॉ. सुधीन्द्र कुमार के संयुक्त संपादन में संकलित 'पत्रकारिता संदर्भ कोश', विष्णु पंकज द्वारा संपादित 'साक्षात्कार कोश', प्रताप नारायण टंडन का 'बृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश' आदि। प्रो. रमेश जैन द्वारा संपादित एवं नेशनल पब्लिशिंग हाउस से प्रकाशित 'जनसंचार विश्वकोश' ऐसा ही कोश है, जिसे हिन्दी का पहला जनसंचार कोश माना जाता है। इसमें जनसंचार क्षेत्र से जुड़े विविध विधाओं के पारिभाषिक शब्दों का शोधपूर्ण एवं तथ्यात्मक विवेचन किया गया है। इस कोश में शब्दों को निम्नलिखित प्रकार से संकलित किया गया है—

Jump- *समाचार के एक ओर को समाचारपत्र के एक पृष्ठ से दूसरे पृष्ठ पर ले जाने की क्रिया को 'जंप' कहते हैं।*

Scanned with CamScanner

- आरंभ में कोश के सहायक संपादक पंडित बालकृष्ण भट्ट, पंडित रामचंद्र शुक्ल, लाला भगवानदीन और बाबू अमीर सिंह के अतिरिक्त बाबू जगन्मोहन वर्मा, बाबू रामचंद्र वर्मा, पंडित वासुदेव मिश्र, पंडित रामवचनेश मिश्र, पंडित ब्रजभूषण ओझा, श्रीयुत् वेशी कवि आदि अनेक सज्जन भी इस शब्दसंग्रह के काम में सम्मिलित थे। आरंभ में सभा ने यह निश्चित नहीं किया था कि कोश का संपादक किसे बनाया जाए, पर दूसरे वर्ष सभा ने श्यामसुन्दर दास को कोश का प्रधान संपादक बनाना निश्चित किया।
- **सन् १९१०** के आरंभ में शब्दसंग्रह का कार्य समाप्त हो गया। जिन स्लिपों पर शब्द लिखे गए थे, उनकी संख्या अनुमानतः १० लाख थी, जिनमें से आशा की गई थी कि प्रायः १ लाख (बिना दुहराए) शब्द निकलेंगे और प्रायः यही बात अंत में हुई भी।
- **मई, १९१२** में छपाई का कार्य आरंभ हुआ और एक ही वर्ष के अंदर ९६-९६ पृष्ठों की चार संख्याएँ छपकर प्रकाशित हो गई, जिनमें ८६६६ शब्द थे। सर्वसाधारण में इन प्रकाशित संख्याओं का बहुत आदर हुआ।
- इस प्रकार १९१७ तक बराबर काम चलता रहा और कोश की १५ संख्याएँ छपकर प्रकाशित हो गई तथा ग्राहक संख्या में बहुत कुछ वृद्धि हो गई।
- **सन् १९२४** में कोश के संबंध मे एक दुर्घटना हो गई थी। आरंभ में शब्दसंग्रह की जो स्लिपें तैयार हुई थी, उनके २२ बंडल कोश कार्यालय से चोरी हो गए। उनमें 'विव्वोक' से 'शं' तक की और 'शय' से 'सही' तक की स्लिपें थी।

Scanned with CamScanner